९. चिंता

– *जयशंकर प्रसाद*

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह ।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता-कहो उसे जड़ या चेतन ।
दूर-दूर एक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के हृदयसमान,
नीरवता-सी शिला चरण से टकराता फिरता पवमान ।
तरुण तपस्वी-सा वह बैठा साधन करता सुर स्मशान,
नीचे प्रलयसिंधु लहरों का होता था सकरुण अवसान ।
उसी तपस्वी-से लंबे थे देवदारु दो चार खड़े,
हुए हिम धवल, जैसे पत्थर बनकर ठिठुरे रहे अड़े ।
अवयव की दृढ़ मांस पेशियाँ, ऊर्जस्वित था वीर्य अपार,
स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त का होता था जिनमें संचार ।
चिंता कातर वदन हो रहा पौरुष जिसमें ओत-प्रोत,
उधर उपेक्षामय यौवन का बहता भीतर मधुमय स्रोत ।
बंधी महावट से नौका थी सूखे में अब पड़ी रही,
उतर चला था वह जल प्लावन और निकलने लगी मही ।
निकल रही थी मर्म वेदना करुणा विकल कहानी-सी,
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती-सी पहचानी-सी ।
"ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण प्रथम कंप-सी मतवाली ।
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खललेखा,
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल माया की चल रेखा ।

परिचय

जन्म : १८८९, वाराणसी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३७, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : जयशंकर प्रसाद जी हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं । बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद जी कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार के रूप में प्रसिद्‌ध हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'आँसू', 'लहर' (काव्य) 'कामायनी' (महाकाव्य), 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' (ऐतिहासिक नाटक), 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल' (कहानी संग्रह), 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (उपन्यास) आदि ।

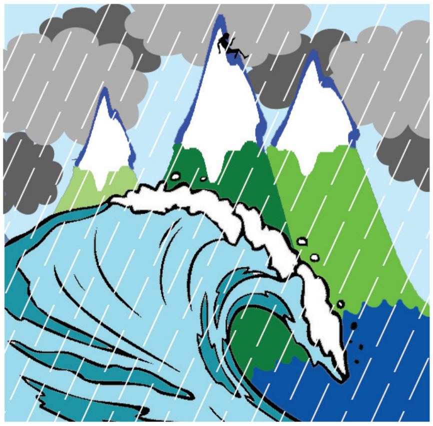

आह! घिरेगी हृदय लहलहे खेतों पर करका घन-सी,
छिपी रहेगी अंतरतम में सबके तू निगूढ़ धन-सी ।
बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिंता तेरे हैं कितने नाम !
अरी पाप है तू, जा, चल जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम ।
विस्मृत आ, अवसाद घेर ले, नीरवते ! बस चुप कर दे,
चेतनता चल जा, जड़ता से आज शून्य मेरा भर दे ।''
''चिंता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की,
उतनी ही अनंत में बनती जातीं रेखाएँ दुख की ।
अरे अमरता के चमकीले पुतलो! तेरे वे जयनाद
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि बनकर मानो दीन; विषाद ।
प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित हम सब थे भूले मद में,
भोले थे, हाँ तिरते केवल सब विलासिता के नद में ।
वे सब डूबे, डूबा उनका विभव, बन गया पारावार
उमड़ रहा था देव सुखों पर दुख जलधि का नाद अपार''

('कामायनी' महाकाव्य से)

— ० —

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश कामायनी महाकाव्य से लिया गया है । 'जल प्रलय' समाप्त हो गया है । पानी धीरे-धीरे उतर रहा है । महाराज मनु हिमालय की ऊँची चोटी पर बैठे हैं । उनके माथे पर चिंता की रेखाएँ उभर आई हैं । जयशंकर प्रसाद जी ने उसी समय की स्थिति, मनु की मनोदशा, उनकी चिंता आदि का वर्णन इस पद्यांश में किया है । यहाँ कवि द्वारा किया गया वर्णन, प्रतीक-बिंब, रूपक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

शब्द संसार

उत्तुंग वि.(सं.) = बहुत ऊँचा
ऊर्जस्वित वि.(सं.) = बलवान, तेजवान
स्फीत वि.(सं.) = समृद्ध, संपन्न, बढ़ा हुआ
मर्म पुं.(सं.) = स्वरूप, रहस्य
व्याली स्त्री.सं. (सं.) = वन की रानी बाघिन
करका पुं.सं.(सं.) = ओला, पत्थर

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

चिंता के नाम

(२) लिखिए :

१. जल के दो रूप

२. देवदार वृक्ष की विशेषताएँ

(३) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
जलधि	....	दुख
पुतले	....	उपेक्षाएँ
रेखाएँ	....	नाद
यौवन	....	चमकीले

(४) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों-

१. सकरुण अवसान
२. दीन-विषाद
३. दुर्जेय
४. नद

(५) कविता में इन अर्थों में आए शब्द ढूँढ़िए :

१. अत्यंत गुप्त -
२. वर्षा -
३. वायु -
४. पृथ्वी/नदी -

(६) कविता ही अंतिम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(७) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना की विधा
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए :

दैनिक जीवन में अपनी पसंद की कोई उपयोगी वस्तु

नाम

उपयोगिता

विशेषताएँ

संपर्क

7IX59R